उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा) : आपका आश्वासन भी हो गया । अब आप बैठिए ।

श्री राम अवधेश सिंह : बहस कब करायेंगे ?

Even for that there are provisions for the Members wherein they can raise the issue for discussion and you can utilise that provision.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): You can raise the discussion even on Bihar or on any important issue and this House can discuss it. There are remedies and you can go through them. Kumari Sayeeda Khatun.

Delay in awarding National Awards to teachers in Madhya Pradesh and other States of the country

कुमारी सईदा खातून (मध्य प्रदेश) : माननीय उप सभाध्यक्ष महोदय, मैं स्पेशल मेंशन के माध्यम से मंत्री महोदय से यह जानना चाहूंगी ।

श्री राम अवधेश सिंह (बिहार) : आपने आश्वासन नहीं दिया इसलिए मैं वाक-आउट करता हूं ।

कुमारी सईदा खातून : और सरकार का ध्यान... (**व्यवधान**)

श्री राम अवधेश सिंह : वाक-आउट करता हूं... (**व्यवधान**)

[At this stage the hon. Member left the Chamber.]

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): It is not going on record. I have not permitted.

कुमारी सईदा खातून : मैं सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हूं कि आखिर इस वर्ष मध्य प्रदेश के शिक्षकों को वर्ष 1988 के देश के सर्वोच्च पुरस्कार से क्यों वंचित रखा गया है । भूतपूर्व राष्ट्रपति देश के महान दार्शनिक स्व० डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जन्म शताब्दी के होने के कारण वर्ष 1988 से शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की संख्या...।

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा) : सईदा खातून एक मिनट के लिए रुकिए ।

In spite of the persuasion from the Opposition Leaders and in spite of the gesture from the Government side in not pressing the motion, I am sorry to say that the Member chose his own way to walk out. The House did not like him to be thrown out. Unfortunately good sense did not prevail upon the Member. It is very unfortunate that the Member disturbed the proceedings of the House and disobeyed the Chair. Even any amount of restraint observed from the Government side and the Chair was not heeded to by the Member, I am very sorry to go on record.

कुमारी सईदा खातून : भूतपूर्व राष्ट्रपति, देश के महान दार्शनिक स्वर्गीय डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जन्म-शताब्दी होने के कारण वर्ष 1988 से शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की संख्या 180 से बढ़ाकर 300 कर दी गई है । खेद का विषय तो यह है कि एक ओर तो नई शिक्षा-नीति के अंतर्गत शिक्षा के प्रसार में गति और परिवर्तन लाने की योजनाएं चलाई जा रही हैं, लेकिन दूसरी ओर पूरे देश में 300 शिक्षक भी नहीं मिले, जिन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा सके । ऐसी स्थिति में शिक्षा के क्षेत्र में क्या कोई परिवर्तन लाया जा सकता है । समाचार-पत्रों की रिपोर्ट से ऐसा आभास होता है कि संभवतः भारत सरकार को राज्य शासन से समय पर प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुए होंगे । इसके लिए संबंधित कर्मचारी/अधिकारी को शिथिलता के लिए दंडित किया जा सकता है, लेकिन योग्य शिक्षकों को राष्ट्रीय सम्मान से वंचित रखना अन्याय होगा ।

यह पहला अवसर है कि मध्य प्रदेश जैसे बड़े राज्य के प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक स्तर तक का एक भी शिक्षक 1988 की राष्ट्रीय पुरस्कार की सूची में सम्मिलित नहीं है । यह हमारे प्रदेश के लिए अपमानजनक स्थिति है । वर्ष 1988 में 300 के विपरीत केवल 161 शिक्षक ही चुने गए हैं, जिन्हें 5 सितंबर 1989 को महामहिम राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार दिया जाएगा अर्थात अभी 139 पुरस्कार और पूरे छह माह की अवधि में बाकी रहते हैं । वर्ष 1987–88 के लिए 141 शिक्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया था । इस साल की सूची की खास बात यह है कि देश के चार बड़े राज्यों– उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और पश्चिमी बंगाल का कोई भी शिक्षक इस पुरस्कार के लिए नहीं चुना गया है । महोदय, जनसंख्या की दृष्टि से देश के सबसे बड़े दो राज्यों उत्तर प्रदेश और बिहार से एक भी शिक्षक को इस सूची में स्थान न मिलने से यदि किसी को आश्चर्य होता है तो इसे अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता । इसी तरह से पश्चिम बंगाल को लगातार दूसरी दफा इस सम्मान से वंचित रखा जाना खलने वाला है ।

जहां तक मध्य प्रदेश का सवाल है इसे इस वर्ष राष्ट्रीय गौरव में शामिल होने का मौका नहीं मिला है । पिछले साल प्रदेश के आठ शिक्षकों का चयन इस हेतु किया गया था । यह बात समझ से परे है कि एक साल के अंदर ही ऐसा कौनसा अंतर आ गया, जिसकी वजह से इस साल प्रदेश के एक भी शिक्षक को इस राष्ट्रीय सम्मान के योग्य नहीं समझा गया । इतना ही नहीं, दूसरे राष्ट्रीय सम्मानों यथा–पदम भूषण, पदम श्री आदि में भी प्रदेश का नाम अकसर सूचियों में देखने को नहीं मिलता । सरसरी तौर पर इस स्थिति के लिए जवाबदार दो कारण दिखाई देते हैं कि या तो हमारी सरकार का दिल्ली में प्रभाव कम है या इसके राष्ट्रीय सम्मानों में उसकी विशेष रुचि नहीं है । इस परिप्रेक्ष्य में केन्द्र का दायित्व सबसे ज्यादा है । अच्छा हो कि वह इन सम्मानों और पुरस्कारों को प्रदान करते वक्त स्पष्ट मापदण्ड सामने रखे और मुनासिब छानबीन के बाद ही सूचियों को अंतिम रूप दे ।

अतएव मेरा आपसे अनुरोध है कि मध्य प्रदेश के योग्य शिक्षकों को वर्ष 1988 की राष्ट्रीय पुरस्कार की सूची में सम्मिलित करने की पहल करें और प्रदेश के शिक्षक वर्ग को अपमानजनक स्थिति से निकाले । मैं आपसे यह भी जानकारी लेना चाहती हूं कि क्या मध्य प्रदेश शासन द्वारा उचित एवम समय पर इस तरफ पहल की गई है ? मेरी मान्यता है कि शायद इस ओर ढील की गई है । लेकिन अब मैं सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित कराना चाहती हूं कि आप 5 सितंबर, 1989 को मध्य प्रदेश के शिक्षकों को पुरस्कार देने से वंचित न रखें ।

एक माननीय सदस्य : केवल मध्य प्रदेश के ही ?

कुमारी सईदा खातून : मेरा मतलब यह है कि चारों स्टेट उत्तर प्रदेश बिहार, और पश्चिमी बंगाल के शिक्षकों को पुरुस्कार की सूची में लाया जाय और उनको सम्मान देकर गौरान्वित किया जाय । शुक्रिया ।

श्रीमती सत्या बहिन (उत्तर प्रदेश) : मैं इसका समर्थन करती हूं ।

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी (उत्तर प्रदेश) : मैं भी समर्थन करता हूं ।

†[کماری سعیدہ خاتون (مدھیہ پردیش) : مانیئے اپ سبھا ادھیکش سبھودے - میں اسپیشل میشن کے ذریعے سے منتری سبھودے سے یہ جاننا چاھونگی - سرکار کا دھیان اس اور آکرشت کرنا چاھتی ھوں کہ آخر اس ورش مدھیہ پردیش کے شکشکوں کو ورش ۱۹۸۸ کے دیش کے سرووچ پریسکار سے کیوں ونچت کیا گیا ھے -

†[] Transliteration in Arabic script.

[کماری سیدہ خاتون]

بھوت پورو راشٹرپتی - دیش کے مہان وارشد سورگیے ڈاکٹر سروپلی رادھا کرشنن کے جنم شتابدی ہونے کے کارن ورش ۱۹۸۸ سے شکشکوں کیلئے راشٹریہ پرسکاروں کی سنکھیا ۱۸۰ سے بڑھاکر ۳۰۰ کردی گئی ہے- کھید کا وشے تو یہ ہے کہ ایک اور تو نئی شکشا نیتی کے انترگت شکشا کے پرسار میں کمی اور پریورتن لانے کی یوجنائیں چلائی جا رہی ہیں - لیکن دوسری اور پورے دیش میں ۳۰۰ شکشک بھی نہیں ملے - جنہیں راشٹریہ پرسکار سے سمانت کیا جا سکے - ایسی سکتھی میں شکشا کے چھیتر میں کیا کوئی پریورتن لایا جا سکتا ہے : سماچار پتروں کی رپورٹ سے ایسا آبھاس ہوتا ہے کہ سمبھوتیہ بھارت سرکار کو راچیہ شاسن سے سمے پر پرستاو پراپت نہیں ہوئے ہونگے - اسکے لئے سیدھیت کرمچاری / ادھیکاری کو شتھلتا کے لئے دنڈت کیا جا سکتا ہے - لیکن یوگیے شکشکوں کو راشٹریہ سمان سے ونچت رکھنا انیائے ہوگا -

یہ پہلا اوسر ہے کہ مدھیہ پردیش جیسے بڑے راجیہ کے پراتھمک سے اچتر مادھیمک استر تک کا ایک بھی شکشک ۱۹۸۸ع کی راشٹریہ پرسکار کی سوچی میں سمیلت نہیں ہے یہ ہمارے پردیش کے لئے اچانچنک استتھی ہے - ورش ۱۹۸۸ میں ۳۰۰ کے وپریت فیول ۱۹۱ شکشک ہی چنے گئے ہیں - جنہیں ۵ ستمبر ۱۹۸۹ع کو مہامہم راشٹر پتی دوارا پرسکار دیا جائیگا - ارتھات ابھی ۱۳۹ پرسکار اور پورے چھ ماہ کی اودھی میں بانٹی رہتے ہیں - ورش ۸۸-۱۹۸۷ کیلئے ۱۴۱ شکشکوں کو پرسکار کیلئے چنا گیا تھا - اس سال کی سوچی کی خاص بات یہ ہے کہ دیش کے چار بڑے راجیوں اتر پردیش اور بہار سے ایک بھی شکشک کو اس سوچی میں استھان نہ ملنے سے اگر تعجب ہوتا ہے تو اسے غیر متوقع نہیں کہا جا سکتا - اس طرح سے مغربی بنگال کو لگاتار دوسری دفعہ اس سمان سے ونچت رکھا جانا کھلنے والا ہے -

جہاں تک مدھیہ پردیش کا سوال ہے اسے اس ورش راشٹریہ گورو میں شامل ہونے کا موقع نہیں ملا ہے - پچھلے سال پردیش کے آٹھ شکشوں کا چین اس ہیتو کیا گیا تھا - یہ بات سمجھ سے پرے ہے - کہ ایک سال کے اندر ہی ایسا کونسا انتر آ گیا جسکی وجہ سے اس سال پردیش کے ایک بھی شکشک کو اس راشٹریہ سمان کے قابل نہیں سمجھا گیا - اتنا ہی نہیں - دوسرے راشٹریہ سمانوں جیسے پدم بھوشن - پدم شری - وغیرہ میں بھی اس پردیش کا نام اکثر سوچیوں میں دیکھنے کو نہیں ملتا - سرسری طور پر اس استھتی کیلئے دو کارن دکھائی دیتے ہیں کہ یا تو ہماری سرکار کا دلی میں پربھاو کم ہے یا راشٹریہ سمانوں میں انکی خاص روچی نہیں ہے - اس پری پریکشیہ میں کیندر کا دایتو سب سے زیادہ ہے - اچھا ہوتا کہ وہ ان سمانوں اور پرسکاروں کو پردان کرتے وقت سپشٹ ماپ دنڈ سامنے رکھیں اور مناسب چھان بین کے بعد ہی سوچیوں کو انتم روپ دیں -

ایٹو میرا آپ سے انوروھ ھے کہ ہ ھیہ پردیس کے قابل شکشکوں کو ورش ۱۹۸۸ کی واشنگٹن پرسکار کی سوچی میں سملت کرنے کی پہل کریں اور پردیش کے بھشک ورگ کو ایسائنچلک استھی سے نکالیں - میں آپ سے یہ بھی جنکاری لینا چاھتی ھوں کہ کیا مدھیہ پردیش شاسن دوارا اچت ایوم وقت پر اس طرف پہل کی گئی ھے - میری مانیتہ ھے کہ شاید اس طرف ڈھیل کی گئی ھے - لیکن اب میں سرکار کا دھیان اس طرف آکرشت کرنا چاھتی ھوں کہ آپ ۵ ستمبر ۱۹۸۹ کو مدھیہ پردیش کے شکشکوں کو پرسکار دینے سے ونچت نہ رکھیں -

ایک معزز ممبر : کھول مدھیہ پردیش کے ھی -

کماری سعیدہ خاتون : میرا مطلب یہ ھے کہ چاروں استھت اتر پردیش - بہار - مدھیہ پردیش اور مغربی بنگال کے شکشکوں کو پرسکار کی سوچی میں لایا جائے - اور انکو سمان دیکر گورانوت کیا جائے - شکریہ -]

Appreciation of U.S. State Department's stand in opposing an anti-India Bill in the U.S. Congress

SHRI P. N. SUKUL (Uttar Pradesh): Mr. Vice-Chairman, Sir, I wish to congratulate and thank the United States Administration, specially the U.S. State Department for its strong opposition to the Bill, introduced in the Congress last week, by ultra conservative republican Member, Mr. Wally Herger and supported by 20 other Members, seeking to deny India its trade status of most favoured nation in America, for alleged human rights violation in Punjab. This opposition came to surface in the testimony of Mr. Howard B. Schaffer, the U.S. Deputy Assistant Secretary of State, before the Asia and Pacific Sub-Committee of Congress headed by Mr. Stephen J. Solarz. Mr. Schaffer who is in charge of South Asia in the State Department has categorically denied the allegation that the Sikhs are subjected to discrimination in India. In this connection he has said:

> "Sikhs are represented in the military and the highest levels in Government. And, a majority of them are opposed to the creation of Khalistan."

Sir, he has further said:

> "India is a vigorous democracy and has an independent press. There is freedom of immigration too."

Mr. Schaffer has also clearly stated:

> "We support (India's) efforts to bring peace and reconciliation to Punjab in the context of India's territorial integrity."

According to him, the most serious domestic problem facing India is the separatist and terrorist activities of a minority of the Sikh community in Punjab. He has added:

> "We cooperate fully with the Indian Government to keep the U.S. from being employed as a base for terrorism against India."

Sir, it is indeed a matter of great satisfaction for India that the U.S.A. which is the second largest democracy in the world views our Punjab problem in its right perspective, understands fully that the majority of Sikhs are opposed to the demand for Khalistan as well as to the terrorist activities and also that the U.S. supports our efforts to contain terrorism in the best interests of our territorial